अलंकार

अलंकार–अलंकार शब्द 'अलम्' और 'कार' शब्दों के मेल से बना है। 'अलम्' का अर्थ है–भूषित करना, सजाना, सुंदर बनाना। अर्थात् अलंकृत करनेवाला साधन ही अलंकार कहलाता है।

सामान्य रूप से अलंकार का अर्थ है–गहना या आभूषण। जिस तरह स्त्रियाँ अपने सौंदर्य को बढ़ाने के लिए विभिन्न आभूषणों का प्रयोग करती हैं उसी प्रकार कवि भी भाषा को सुंदर बनाने के लिए अलंकारों का प्रयोग करते हैं। आचार्य वामन के अनुसार–"जो किसी को अलंकृत करे, वही अलंकार है।" संक्षेप में हम कह सकते हैं कि 'अलंकरोति इति अलंकारः।' इस प्रकार हम कह सकते हैं–

काव्य की शोभा बढ़ानेवाले गुण-धर्मों को अलंकार कहते हैं।

अलंकार के भेद*

काव्य में शब्द और अर्थ दोनों ही अपना अलग-अलग एवं विशेष महत्त्व रखते हैं। कभी शब्द विशेष के प्रयोग से काव्य-सौंदर्य में वृद्धि होती है तो कभी अर्थ में चमत्कार उत्पन्न होता है। इस आधार पर अलंकार के मुख्यतया दो भेद होते हैं–

(क) शब्दालंकार (ख) अर्थालंकार

(क) शब्दालंकार

जब काव्य में किसी शब्द विशेष के कारण चमत्कार उत्पन्न होता है अथवा सौंदर्य वृद्धि होती है, तब वहाँ शब्दालंकार होता है। यहाँ ध्यातव्य है कि शब्द विशेष के स्थान पर उसका पर्यायवाची रख देने से उसका सौंदर्य समाप्त हो जाता है; जैसे–

'पानी गए न ऊबरे, मोती, मानुष, चून।'

यहाँ 'मोती', 'मानुष' और 'चून' प्रत्येक शब्द के लिए 'पानी' का अलग-अलग अर्थ है। अब इसके स्थान पर यदि वारि, नीर, तोय, अंबु, सलिल, जल आदि शब्दों में से कोई शब्द रखें तो सौंदर्य समाप्त हो जाता है; क्योंकि अलंकार खत्म हो जाता है। केवल 'पानी' विशिष्ट तथा अलग-अलग अर्थ रखता है जिसकी अभिव्यक्ति अन्य शब्द से नहीं हो पाती है।

शब्दालंकार के भेद–शब्दालंकार के मुख्यतया तीन भेद हैं–

(1) अनुप्रास (2) यमक (3) श्लेष।

1. **अनुप्रास अलंकार**–जब काव्य में किसी वर्ण की आवृत्ति एक से अधिक बार होती है तब अनुप्रास अलंकार होता है; जैसे–

चारु चंद्र की चंचल किरणें खेल रही हैं जल थल में।

इस काव्य पंक्ति में 'च' वर्ण की आवृत्ति एक से अधिक बार हुई है, अतः यहाँ अनुप्रास अलंकार है।

*पाठ्यक्रम में अनुप्रास, यमक, श्लेष, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति और मानवीकरण अलंकार ही हैं। यहाँ हम उनके बारे में पढ़ेंगे।

अन्य उदाहरण–

- कल कानन कुंडल मोरपखा उर पै बनमाल बिराजति है। ('क' एवं 'ब' वर्ण की आवृत्ति)
- तरनि तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाए। ('त' वर्ण की आवृत्ति)
- कालिंदी कूल कदंब की डारन। ('क' वर्ण की आवृत्ति)
- रघुपति राघव राजा राम। पतित पावन सीताराम। ('र' एवं 'प' वर्ण की आवृत्ति)
- विमल वाणी ने वीणा ली कमल कोमल कर में सप्रीत। ('व' और 'क' वर्ण की आवृत्ति)
- सुरभित सुंदर सुखद सुमन तुझ पर खिलते हैं। ('स' वर्ण की आवृत्ति)
- मैया मैं नहिं माखन खायो। ('म' वर्ण की आवृत्ति)
- सठ सुधरहिं सत संगति पाई। पारस परस कुधातु सुहाई।। ('स' और 'प' वर्ण की आवृत्ति)
- मुदित महीपति मंदिर आए। सेवक सचिव सुमंत बुलाए।। ('म' और 'स' वर्ण की आवृत्ति)
- बंदउँ गुरुपद पदुम परागा। सुरुचि सुवास सरस अनुरागा।। ('प' और 'स' वर्ण की आवृत्ति)

2. **यमक अलंकार–**जब काव्य में एक ही शब्द दो बार आता है और दोनों के अर्थ अलग-अलग हों तब वहाँ यमक अलंकार होता है; जैसे–

- कनक-कनक ते सौ गुनी, मादकता अधिकाय।
  या खाए बौराय नर, वा पाए बौराय।।

इस दोहे की प्रथम पंक्ति में 'कनक' शब्द दो बार आया है परंतु दोनों के अर्थ अलग-अलग हैं। एक कनक का अर्थ धतूरा और दूसरे कनक का अर्थ सोना है। अतः यहाँ यमक अलंकार है।

अन्य उदाहरण

- कहै कवि बेनी, बेनी व्याल की चुराई लीन्ही,
  रति-रति शोभा सब रति के शरीर की।

यहाँ 'बेनी' के दो अर्थ–एक कवि एवं बालों की चोटी तथा 'रति' के दो अर्थ–तनिक-तनिक, थोड़ी-थोड़ी और कामदेव की पत्नी है।

- नगन जड़ाती थी वे नगन जड़ाती है। यहाँ 'नगन' के दो अर्थ हैं–बिना वस्त्रों के और हीरा-पन्ना जवाहरात आदि नग।
- तीन बेर खाती थी वे तीन बेर खाती है। यहाँ 'बेर' के दो अर्थ हैं–एक स्वादिष्ट फल और बेला या समय।
- तो पै वारौ उरवशी, सुन उरवशी सुजान।
  तू मोहन के उरवशी ह्वै उरवशी समान।।

यहाँ 'उरवशी' के दो अर्थ हैं–एक अप्सरा और हृदय में बसी हुई।

- करका मनका डारि दे, मनका मनका फेर। यहाँ 'मनका' के दो अर्थ हैं–हृदय का और सुमिरन करने वाली माला के मोती।
- काली घटा का घमंड घटा नभ तारक मंडल वृंद खिले। यहाँ 'घटा' शब्द के दो अर्थ हैं–काले बादलों का झुंड और कम हो जाना।
- जेते तुम तारे तेते नभ में न तारे हैं। यहाँ 'तारे' के दो अर्थ हैं–उद्धार करना और नक्षत्रगण।

3. **श्लेष अलंकार–**जब काव्य में कोई शब्द एक ही बार आता है, परंतु उसके एक से अधिक अर्थ होते हैं तब वहाँ श्लेष अलंकार होता है; जैसे–

चरन धरत चिंता करत, चितवत चारों ओर।
सुबरन को खोजत फिरत, कवि व्यभिचारी चोर।।

यहाँ 'सुबरन' शब्द का एक बार प्रयोग हुआ है, परंतु उसके एक से अधिक अर्थ प्रकट हो रहे हैं–

सुबरन–सुंदर वर्ण या अक्षर–कवि के संबंध में।

सुंदर रूप-रंग–व्यभिचारी के संबंध में।

स्वर्ण या सोना–चोर के संबंध में।

अतः उपर्युक्त काव्य पंक्तियों में श्लेष अलंकार है।

अन्य उदाहरण

- मंगन के देखि पट देत बार-बार है। (पट–दरवाजा, वस्त्र)
- मधुबन की छाती को देखो, सूखी इसकी कितनी कलियाँ।
  (कलियाँ–खिलने से पूर्व फूल की दशा, यौवन से पहले की दशा।)
- रहिमन पानी रखिए, बिन पानी सब सून।
  पानी गए न ऊबरे मोती मानुष चून।।
  (पानी–चमक, इज़्ज़त, जल)
- जो रहीम गति दीप की कुल कपूत गति सोय।
  बारे उजियारो करै, बढ़ै अँधरो होय।।
  ('बारे' शब्द के अर्थ हैं–बचपन में, जलाने पर) ('बढ़ै' शब्द के अर्थ हैं–बढ़ने पर, बुझने पर)
- को घटि ये वृषभानुजा, वे हलधर के वीर।
  (वृषभानुजा–वृषभानु की पुत्री अर्थात् राधा, वृषभ की अनुजा अर्थात् बैल की बहन)
  (हलधर–बलराम, हल को धारण करने वाला)
- नर की अरु नल नीर की, गति एकै कर जोय।
  जे तो नीचो ह्वे चलै, ते ते ऊँचो होय।।
  (नीचो–नीचे की ओर (निम्न स्थिति), नम्र, विनीत। ऊँचो–ऊपर की ओर (उच्च स्थिति), सम्मानित।)
- मेरी भव बाधा हरो राधा नागरि सोय।
  जा तन की झाईं पड़े श्याम हरित दुति होय।।
  (हरित–हर्षित (प्रसन्न) होना, हर लेना, हरे रंग का होना।)

(ख) अर्थालंकार

जब काव्य में अर्थ के माध्यम से सौंदर्य में वृद्धि होती है अथवा चमत्कार उत्पन्न होता है, तब अर्थालंकार होता है। इसके निम्नलिखित भेद हैं–

(1) उपमा (2) रूपक (3) उत्प्रेक्षा (4) अतिशयोक्ति (5) मानवीकरण

1. **उपमा अलंकार**–जब किसी वस्तु या व्यक्ति की तुलना अत्यंत समानता के कारण किसी अन्य प्रसिद्ध वस्तु या व्यक्ति से की जाती है तब वहाँ उपमा अलंकार होता है; जैसे–

   सीता का मुख चंद्रमा के समान सुंदर है।

उपमा अलंकार के चार अंग होते हैं–(*i*) उपमेय (*ii*) उपमान (*iii*) वाचक शब्द (*iv*) साधारण धर्म

(*i*) **उपमेय**–जिस प्रस्तुत वस्तु की समानता की जाती है, उसे उपमेय कहते हैं; जैसे–

सीता का मुख चंद्र के समान सुंदर है।

यहाँ सीता के मुख की समानता की जा रही है। अतः **सीता का मुख** उपमेय है।

(*ii*) **उपमान**–प्रस्तुत वस्तु उपमेय की तुलना जिस अप्रस्तुत वस्तु से की जाती है, उसे उपमान कहते है; जैसे–

सीता का मुख **चंद्र** के समान सुंदर है।

यहाँ प्रस्तुत वस्तु सीता के मुख की तुलना अप्रस्तुत वस्तु चंद्र से की गई है। अतः **चंद्र** उपमान है।

(*iii*) **वाचक शब्द**–उपमेय की उपमान से तुलना करने के लिए जिन तुलनात्मक शब्दों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें वाचक शब्द कहते हैं; जैसे–

सीता का मुख चंद्र के **समान** सुंदर है।

यहाँ तुलनात्मक प्रयुक्त शब्द **समान** है। अतः **समान** वाचक शब्द है।

(*iv*) **साधारण धर्म**–उपमेय और उपमान की समानता जिस शब्द से बताई जाती है, उसे साधारण धर्म कहते हैं; जैसे–

सीता का मुख चंद्र के समान **सुंदर** है।

इसमें 'सुंदर' साधारण धर्म है।

नोट–जहाँ काव्य में उपमा के चारों अंग पाए जाते हैं वहाँ पूर्णोपमा अलंकार कहा जाता है और किसी एक अंग का लोप होने पर लुप्तोपमा अलंकार कहा जाता है। यहाँ पूर्णोपमा और लुप्तोपमा दोनों का 'उपमा' अलंकार से काम चला सकते हैं।

उदाहरण–

(1) **'पीपर-पात सरिस मन डोला'**

उपमेय–मन

उपमान–पीपर-पात

वाचक शब्द–सरिस

साधारण धर्म–डोला

अतः यहाँ उपमा अलंकार के चारों अंग होने से पूर्णोपमा अलंकार है।

(2) **मुख बाल रवि-सम लाल होकर ज्वाल-सा बोधित हुआ।**

उपमेय–मुख

उपमान–बाल रवि-सम

वाचक शब्द–सा

साधारण धर्म–बोधित हुआ

यहाँ उपमा अलंकार के चारों अंग होने से पूर्णोपमा अलंकार है।

(3) **यह देखिए अरविंद-से शिशुवृंद कैसे सो रहे।**

उपमेय–शिशुवृंद

उपमान–अरविंद

वाचक शब्द–से

साधारण धर्म–नहीं है, लुप्त है।

अतः यहाँ साधारण-धर्म लुप्त होने पर लुप्तोपमा अलंकार है।

उपमा अलंकार की पहचान

जहाँ वाचक शब्द सा, सी, से, सम, सदृश, समान, ज्यों, शब्द आएँ वहाँ उपमा अलंकार होता है।

अन्य उदाहरण

- **हरि पद कोमल कमल-से।** (हरि के चरणों की तुलना कमल से की गई है।)

  हाय! फूल-सी कोमल बच्ची हुई राख की ढेरी थी। (बच्ची की तुलना फूल से)

- **मखमल के झूल पड़े हाथी-सा टीला।** (टीले की तुलना हाथी से)
- **वह किसलय के से अंग वाला कहाँ है?** (अंगों की तुलना किसलय से की गई है।)
- **उषा सुनहले तीर बरसती, जयलक्ष्मी-सी उदित हुई।** (उषा की तुलना जयलक्ष्मी से की गई है।)
- **यह देखिए अरविंद-से शिशुवृंद कैसे सो रहे।** (शिशुवृंद की तुलना अरविंद (कमल) से की गई है।)
- **तब तो बहता समय शिला-सा थम जाएगा।** (समय की तुलना शिला से)
- **नील गगन सदृश शांत था सो रहा।** (सोए व्यक्ति की तुलना शांत नील गगन से)
- **गंगा तेरा नीर अमृत सम उत्तम है।** (गंगा के पानी की तुलना अमृत से)
- **पीपर पात सरिस मन डोला।** (चंचल मन की तुलना पीपल के पत्ते से।)
- **निर्मल तेरा नीर अमृत सम उत्तम।** (मातृभूमि की नदियों के जल की तुलना अमृत से की गई है।)
- **कबिरा माया मोहिनी जैसे मीठी खाँड़।** (माया की तुलना मीठी खाँड़ से)

2. रूपक अलंकार

जब गुण की अत्यधिक समानता के कारण उपमेय में उपमान का अभेद आरोप कर दिया जाता है तब रूपक अलंकार होता है। इसमें वाचक शब्दों का अभाव होता है; जैसे–

मैया मैं तो चंद्र-खिलौना लैहों। (हे माँ! मैं तो चंद्रमा रूपी खिलौना लूँगा।)

यहाँ चंद्रमा (उपमेय) में खिलौना (उपमान) का आरोप होने से रूपक अलंकार है।

अन्य उदाहरण

- **राम नाम मणि-दीप धरु जीह देहरी द्वार।**
  एक राम धनश्याम हित चातक तुलसीदास।।
  यहाँ 'मणि' उपमेय पर 'दीप' उपमान का आरोप होने से रूपक अलंकार
- **चरण कमल बंदौ हरि राइ।**
  'चरण' उपमेय पर 'कमल' उपमान का आरोप
- **माया दीपक नर पतंग भ्रमि-भ्रमि इवै पड़ंत।**
  'माया' उपमेय पर 'दीपक' उपमान का तथा 'नर' उपमेय पर 'पतंग' उपमान का आरोप
- **अंबर पनघट में डुबो रही तारा-घट ऊषा नागरी।**
  'अंबर' पर 'कुएँ' (पनघट) का, 'तारों' पर 'घड़े' का तथा 'उषा' पर 'नागरी' (चतुर स्त्री) का आरोप
- **शशि-मुख पर घूँघट डाले।** ('शशि' पर 'मुख' का आरोप)
- **प्रीति-नदी में पाँउ न बोर्‌यो।** ('प्रीति' पर 'नदी' का आरोप)

3. उत्प्रेक्षा अलंकार

जहाँ प्रस्तुत (उपमेय) पर अप्रस्तुत (उपमान) का भेद रूप आरोप होता है, वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है।
अर्थात् उपमेय और उपमान की गुण, धर्म की समानता के कारण समान होने की संभावना कर ली जाती है या उपमेय को उपमान जैसा मान लिया जाता है।

पहचान–उत्प्रेक्षा अलंकार में वाचक शब्द मानो, मनहुँ, जानो, जनहुँ, ज्यों जनु, जैसे आदि का प्रयोग होता है; जैसे–

- **सोहत ओढ़े पीत-पट स्याम सलौने गात।**
  मनहुँ नीलमणि सैल पर आतप पर्‌यौ प्रभात।।

यहाँ श्रीकृष्ण के सुंदर श्याम में नीलमणि पर्वत की और उनके शरीर पर लिपटे हुए पीतांबर में प्रभात की धूप की मनोरम संभावना की कल्पना की गई है। इसमें वाचक शब्द 'मनहुँ' है। अतः यहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार है।

- **सिर फट गया उसका वहीं**
  मानो अरुण रंग का घड़ा।

यहाँ उपमेय फटा सिर पर अरुण-रंग का घड़ा उपमान से समानता की संभावना की गई है। यहाँ वाचक शब्द 'मानो' है।

अन्य उदाहरण

- **देखन नगर भूप सुत आए। समाचार पुरवासिन्ह पाए।**
  धाए काम धाम सब त्यागी। मनहुँ रंक निधि लूटन लागी।।
  यहाँ उपमेय श्रीराम और लक्ष्मण के सौंदर्य में निधि (खजाने) से संभावना व्यक्त की गई है। 'मनहुँ' वाचक शब्द है।
- **कहती हुई यूँ उत्तरा के नेत्र जल से भर गए।**
  हिमकणों से पूर्ण मानो हो गए पंकज नए।।
  यहाँ उत्तरा के आँसू भरे नयनों (उपमेय) में ओस के जलबिंदु पंकज यानी कमल (उपमान) की संभावना व्यक्त की गई है। 'मानो' वाचक शब्द है।
- **पद्‌मावती सब सखी बुलाई। मनु फुलवारी सबै चलि आई।।**
  यहाँ पद्‌मावती की सखियों (उपमेय) में फुलवारी (उपमान) की संभावना व्यक्त की गई है। 'मनु' वाचक शब्द है।
- **उस काल मारे क्रोध के तन काँपने उसका लगा।**
  मानो हवा के बेग से सोता हुआ सागर जगा।।
  यहाँ अभिमन्यु की मृत्यु का समाचार सुन क्रोधित अर्जुन (उपमेय) में सागर के उद्‌वेलित होने (उपमान) की संभावना व्यक्त की गई है। 'मानो' वाचक शब्द है।
- **ले चला साथ मैं तुझे कनक,**
  ज्यों भिक्षुक लेकर स्वर्ण-झनक।
  यहाँ कवि निराला ने अपनी पुत्री (उपमेय) में स्वर्ण-झनक (उपमान) की संभावना व्यक्त की है। 'ज्यों' वाचक शब्द है।
- **नील परिधान बीच सुकुमार, खुल रहा मृदुल अधखुला अंग।**
  खिला हो ज्यों बिजली का फूल, मेघवन बीच गुलाबी रंग।।
  यहाँ सतरूपा के नीले परिधान में अधखुले अंगों (उपमेय) में मेघ में चमकती बिजली के फूल (उपमान) की संभावना व्यक्त की गई है। 'ज्यों' वाचक शब्द है।

4. अतिशयोक्ति अलंकार

जहाँ किसी बात को इतना बढ़ा-चढ़ाकर कहा जाए कि जिसका होना सामान्य और असमान्य स्थितियों में संभव न हो, वहाँ अतिशयोक्ति अलंकार होता है; जैसे—

- **हनुमान की पूँछ में, लग न पाई आग।**
  सारी लंका जल गई, गए निशाचर भाग।

यहाँ हनुमान की पूँछ में अभी आग लगा भी नहीं पाए थे कि उससे पहले ही लंका का जल जाना दिखाया गया है। अतः यहाँ अतिशयोक्ति अलंकार है।

- **देखि सुदामा की दीन-दशा करुणा करके करुणानिधि रोए।**
  पानी परात कौ हाथ छुऔ नहिं नैनन के जल सौं पग धोए।

यहाँ आँखों से अनपेक्षित आँसुओं को अविरल धारा के रूप में प्रस्तुत किया है। जिसके कारण सुदामा के पैर धोने के लिए अन्य जल की आवश्यकता नहीं पड़ी। अतः यहाँ अतिशयोक्ति अलंकार है।

अन्य उदाहरण

- **देख लो साकेत नगरी है यही।**
  स्वर्ग से मिलने गगन में जा रही।।
  यहाँ साकेत नगरी में स्वर्ग जैसे गुणों से समानता बताई गई है जो संभव नहीं है। अतः अतिशयोक्ति अलंकार है।
- **प्राण छूटे प्रथमै रिपु के रघुनायक सायक छूट न पाए।**
  यहाँ युद्ध में श्रीराम की धनुष से बाण छूटने से पहले ही शत्रु के प्राण निकल जाते हैं जो संभव नहीं। अतः अतिशयोक्ति अलंकार है।
- **आगे नदिया पड़ी अपार, घोड़ा कैसे उतरे पार।**
  राणा ने सोचा इस पार, तब तक घोड़ा था उस पार।।
  रास्ते में आई नदी कैसे पार की जाए यह राणा प्रताप सोच ही रहे थे कि तब तक चेतक नदी पार हो गया, जो सत्यता से परे लगता है। अतः अतिशयोक्ति अलंकार है।

5. मानवीकरण अलंकार

जहाँ जड़ पदार्थों पर मानवीय भावनाओं का आरोप होता है, वहाँ मानवीकरण अलंकार होता है। अर्थात् जड़ वस्तु या प्रकृति को जीवंत मानव की तरह कार्य करते हुए दिखाया जाता है तो मानवीकरण अलंकार होता है; जैसे–

दिवसावसान का समय
मेघमय आसमान से उतर रही है।
वह संध्या सुंदरी परी-सी
धीरे-धीरे-धीरे।

यहाँ **संध्या को परी के रूप में** प्रस्तुत करने से मानवीकरण अलंकार है।

उषा सुनहरे तीर बरसती
यह लक्ष्मी-सी उदित हुई।

यहाँ **ऊषा को नायिका के रूप में** प्रस्तुत करने से मानवीकरण अलंकार है।

अन्य उदाहरण

- **बीती विभावरी जाग री,**
  अंबर पनघट में डुबो रही
  तारा-घट ऊषा नागरी।
  यहाँ **ऊषा को नायिका के रूप में** प्रस्तुत करने से मानवीकरण अलंकार है।
- **मेघ आए बड़े बन-ठनकर सँवर के।**
  यहाँ **मेघ को शहरी मेहमान के रूप में** प्रस्तुत करने से मानवीकरण अलंकार है।
- **है वसुंधरा बिखेर देती, मोती सबके सोने पर।**
  रवि बटोर लेता है उनको सदा सवेरा होने पर।।
  यहाँ **वसुंधरा और सूर्य को मानवीय क्रियाएँ** करते दिखाया गया है, अतः मानवीकरण अलंकार है।
- **पवन झुलावै, केकी-कीर बतरावै 'देव'**
  कोकिल हलावै-हुलसावै कर तारी दै।
  यहाँ **पवन, केकी-कीर और कोयल को मानवीय क्रियाएँ** करते दिखाया गया है, अतः मानवीकरण अलंकार है।

- **पूरित पराग सों उतारो करै राई नोन,**
  कंजकली नायिका लतान सिर सारी दै।
  यहाँ **कंजकली को नायिका के रूप में प्रस्तुत किया जाने से** मानवीकरण अलंकार है।
- **अभी समय भी नहीं, थकी सोई है मेरी मौन व्यथा।**
  यहाँ **'व्यथा' को मानवीय क्रियाएँ करते** दिखाने से मानवीकरण अलंकार है।
- **कहीं साँस लेते हो, घर-घर भर देते हो,**
  यहाँ **वंसत को मानवीय क्रियाएँ** करते हुए दिखाए जाने के कारण मानवीयकरण अलंकार है।
- **हैं किनारे कई पत्थर पी रहे चुपचाप पानी।**
  यहाँ **पत्थरों को पानी पीने जैसी मानवीय क्रिया करते हुए** दिखाया गया है, अतः मानवीकरण अलंकार है।
- **इस सोते संसार बीच,**
  जगकर, सजकर रजनी बाले।
  यहाँ **रजनी (रात) को मानवीय क्रियाएँ करते हुए** दिखाया गया है, अतः मानवीकरण अलंकार है।

- **यमक और श्लेष अलंकारों में अंतर–**

यमक अलंकार में एक शब्द एक से अधिक बार प्रयुक्त होता है और उनके अर्थ अलग-अलग होते हैं।

श्लेष अलंकार में प्रयुक्त किसी एक शब्द के अर्थ एक से अधिक होते हैं; जैसे–

1. **कनक-कनक** ते सौ गुनी
   यहाँ एक कनक का अर्थ है–**धतूरा** और दूसरे कनक का अर्थ है–**सोना**। (यमक अलंकार)
2. मंगन को देखि **पट** देत बार-बार
   यहाँ प्रयुक्त 'पट' एक ही शब्द के दो अर्थ हैं–**वस्त्र** और **कपाट**। (श्लेष अलंकार)

- **उपमा और रूपक अलंकारों में अंतर–**

उपमा अलंकार में उपमेय और उपमान में किसी वाचक शब्द से समानता दिखाई जाती है।

रूपक अलंकार में उपमेय और उपमान में अभेद रूप आरोप होता है। इसमें वाचक शब्द का प्रयोग नहीं होता है; जैसे–

पीपर पात सरिस मन डोला। (उपमा अलंकार)
चरण-कमल बंदौ हरि राई। (रूपक अलंकार)

- **रूपक और उत्प्रेक्षा अलंकारों में अंतर–**

रूपक अलंकार में उपमेय और उपमान में अभेद रूप आरोप होता है।

उत्प्रेक्षा अलंकार में उपमेय और उपमान में भेद रूप आरोप होता है। इसमें आरोप करने के लिए उपमेय, उपमान जैसा प्रतीत होता है। इसके लिए मानो, मनहुँ आदि शब्दों का प्रयोग होता है; जैसे–

चरण-कमल सुशोभित हो रहे। (रूपक अलंकार)
चरण मानो कमल है। (उत्प्रेक्षा अलंकार)

पाठ्यपुस्तक में संकलित कुछ काव्य पंक्तियाँ और उनमें निहित अलंकार

1. केदारनाथ अग्रवाल–चंद्रगहना से लौटती बेर

- यह हरा ठिगना चना
  बाँधे मुरैठा शीश पर – मानवीकरण अलंकार
- कह रही है, जो छुए यह
  दूँ हृदय का दान उसको – मानवीकरण अलंकार

- और सरसों की न पूछो
  हो गई सबसे सयानी — मानवीकरण अलंकार और अनुप्रास अलंकार
- फाग गाता मास फागुन
  आ गया है आज जैसे — मानवीकरण अलंकार
- प्रकृति का अनुराग-अंचल हिल रहा है — रूपक अलंकार
- हैं कई पत्थर किनारे पी रहे चुपचाप पानी — मानवीकरण अलंकार
- इधर-उधर रींवा के पेड़
  काँटेदार कुरूप खड़े हैं। — अनुप्रास अलंकार
- जहाँ जुगल जोड़ी रहती है। — अनुप्रास अलंकार

2. सर्वेश्वर दयाल सक्सेना—मेघ आए

- मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के — मानवीकरण अलंकार
- पाहुन ज्यों आए हों गाँव में शहर के — उत्प्रेक्षा अलंकार
- पेड़ झुक झाँकने लगे गरदन उचकाए — मानवीकरण अलंकार
- आँधी चली, धूल भागी घाघरा उठाए — मानवीकरण अलंकार
- बूढ़े पीपल ने आगे बढ़कर जुहार की, — मानवीकरण अलंकार
- बोली अकुलाई लता ओट हो किवार की — मानवीकरण अलंकार
- हरसाया ताल लाया पानी परात भर के — मानवीकरण अलंकार
- क्षितिज-अटारी गहराई दामिनी दमकी, — रूपक अलंकार

3. चंद्रकांत देवताले—यमराज की दिशा

- मैं दक्षिण में दूर-दूर तक गया — अनुप्रास अलंकार

4. राजेश जोशी-बच्चे काम पर जा रहे हैं

- सारी रंग-बिरंगी किताबों को
  क्या काले पहाड़ के नीचे दब गए हैं सारे खिलौने — अनुप्रास अलंकार

प्रश्न–अभ्यास

1. निम्नलिखित पंक्तियों में निहित अलंकारों को पहचानकर उनके नाम दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए—

1. *शशि-मुख पर घूँघट डाले।* ....
2. *मुदित महीपति मंदिर आए।* ....
3. *यह देखिए, अरविंद से शिशुवृंद कैसे सो रहे।* ....
4. *रति-रति शोभा सब रति के शरीर की।* ....
5. *कल कानन कुंडल मोर पखा, उर पै बनमाल बिराजत है।* ....
6. *हरषाया ताल लाया पानी परात भरके।* ....
7. *मधुबन की छाती को देखो, सूखी इसकी कितनी कलियाँ।* ....
8. *कहे कवि बेनी, ब्याल की चुराई लीन्हीं।* ....

9. *'बरसत बारिद बूँद गहि' चाहत चढ़न अकाश।* ....
10. *हाय फूल-सी कोमल बच्ची हुई राख की थी ढेरी।* ....
11. *सुरभित सुंदर सुखद सुमन तुझ पर झरते हैं।* ....
12. *सिर फट गया उसका वहीं मानो अरुण रंग का घड़ा।* ....
13. *पीपर पात सरिस मन डोला।* ....
14. *आरसी से अबंर में आभा-सी उजारी लगै।* ....
15. *कंकन किंकनि नूपुर धुनि सुनि।* ....
16. *बारे उजियारो करे बढ़े अँधेरो होय।* ....
17. *काली घटा का घमंड घटा* ....
18. *मुख बाल रवि-सम लाल होकर ज्वाल-सा बोधित हुआ।* ....
19. *मनहुँ नीलमणि सैल पर, आतप पर्यौ प्रभात।* ....
20. *मैया मैं तो चंद्र-खिलौना लैहों।* ....
21. *मेघ आए बन-ठन के, सँवर के।* ....
22. *है बसुंधरा बिखरे देती, मोती सबके सोने पर।* ....
23. *सुनत जोग लागत है ऐसो, ज्यों करुई ककड़ी।* ....
24. *चरण-कमल बंदौ हरि राई।* ....
25. *जा तन की झाँई परे श्याम हरित दुति होय।* ....
26. *हिमकणों से पूर्ण मानो हो गए पंकज नए।* ....
27. *तीन बेर खाती थीं वे तीन बेर खाती हैं।* ....
28. *सहस्रबाहु सम सो रिपु मोरा।* ....
29. *आए महंत वसंत।* ....
30. *कर का मनका डारि दे मन का मनका फेर।* ....
31. *आगे-आगे नाचती गाती बयार चली।* ....

2. दिए गए अलंकार को व्यक्त करने वाली काव्य-पंक्तियाँ लिखिए–

1. *अनुप्रास अलंकार*
2. *मानवीकरण अलंकार*
3. *श्लेष अलंकार*
4. *रूपक अलंकार*
5. *अनुप्रास अलंकार*
6. *उपमा अलंकार*
7. *उत्प्रेक्षा अलंकार*
8. *यमक अलंकार*
9. *मानवीकरण अलंकार*
10. *उत्प्रेक्षा अलंकार*

उत्तर

1.
1. रूपक अलंकार
2. अनुप्रास अलंकार
3. उपमा अलंकार
4. यमक अलंकार
5. अनुप्रास अलंकार
6. मानवीकरण अलंकार

7. श्लेष अलंकार
8. यमक अलंकार
9. अनुप्रास अलंकार
10. उपमा अलंकार
11. अनुप्रास अलंकार
12. उत्प्रेक्षा अलंकार
13. उपमा अलंकार
14. उपमा अलंकार
15. अनुप्रास अलंकार
16. श्लेष अलंकार
17. यमक अलंकार
18. उपमा अलंकार
19. उत्प्रेक्षा अलंकार
20. रूपक अलंकार
21. मानवीकरण अलंकार
22. मानवीकरण अलंकार
23. उपमा अलंकार
24. रूपक अलंकार
25. श्लेष अलंकार
26. उत्प्रेक्षा अलंकार
27. यमक अलंकार
28. अनुप्रास अलंकार/उपमा अलंकार
29. रूपक अलंकार
30. यमक अलंकार
31. मानवीकरण अलंकार।

2.
1. चारु चंद्र की चंचल किरणें।
2. प्रातहि जगावत गुलाब चटकारी दै।
3. पानी गए न ऊबरै मोती मानुष चून।
4. मैया मैं तो चंद्र खिलौना लैहों।
5. मुदित महीपति मंदिर आए।
6. वह दीपशिखा-सी शांत भाव में लीन।
7. मनहुँ नीलमणि सैल पर, आतप पर्‌यौ प्रभात।
8. कनक-कनक ते सौ गुनी, मादकता अधिकाय।
9. बोली अकुलाई लता ओट हो किवार की।
10. मनहुँ रंक निधि लूटन लागी।

स्वयं करें

1. निम्नलिखित अलंकार व्यक्त करने वाली उपयुक्त काव्य पंक्तियाँ लिखिए—

1. अनुप्रास अलंकार
2. मानवीकरण अलंकार
3. उपमा अलंकार
4. रूपक अलंकार
5. यमक अलंकार
6. उत्प्रेक्षा अलंकार
7. अतिशयोक्ति अलंकार
8. श्लेष अलंकार

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

1. जब शब्द विशेष के प्रयोग से काव्य में सुंदरता आ जाती है तब उसे कौन-सा अलंकार कहते हैं?
2. जब काव्य में सौंदर्य-वृद्धि उसके अर्थ के कारण होती है तो वहाँ कौन-सा अलंकार होता है?
3. जब काव्य में प्रयुक्त शब्द के एक से अधिक अर्थ हों तो उसे कौन-सा अलंकार कहते हैं?
4. श्लेष अलंकार किस अलंकार का भेद है?
5. अर्थालंकार के कितने भेद होते हैं? उनके नाम लिखिए।
6. जब उपमेय की उपमान से तुलना या समानता प्रदर्शित की जाती है तो उसे कौन-सा अलंकार कहते हैं?
7. जब एक शब्द कई बार प्रयुक्त होता है किंतु उन शब्दों के अर्थ अलग-अलग होते हैं तो वहाँ कौन-सा अलंकार होता है?

8. रहिमन **पानी** राखिए बिन **पानी** सब सून।
पानी गए न ऊबरे मोती मानुष चून।।
प्रस्तुत दोहे में कौन-सा अलंकार है?

9. 'पीपर पात सरिस मन डोला' में निहित अलंकार का नाम लिखिए।

10. जब उपमेय और उपमान में अभेद समानता हो तो उसे कौन-सा अलंकार कहते हैं?

3. निम्न काव्य-पंक्तियों में निहित अलंकारों के नाम रिक्त स्थान में लिखिए–

1. अपरस रहत सनेह तगा तैं, नाहिन मन अनुरागी। ....
2. पुरइनि पात रहत जल भीतर ....
3. प्रीति-नदी में पाऊँ न बोर्‌यौ ....
4. सूरदास अबला हम भोरी, गुर चाँटी ज्यौं पागी। ....
5. अवधि अधार आस आवन की, ...
6. अब इन जोग सँदेसनि सुनि-सुनि, बिरहिनि बिरह दही। ....
7. हमारैं हरि-हारिल की लकड़ी। ....
8. सुनत जोग लागत है ऐसौ ज्यौं करुई ककरी। ....
9. सेवक सो जो करै सेवकाई। अरिकरनी करि करिअ लराई।। ....
10. सुनहु राम जेहि सिवधनु तोरा। सहसबाहु सम सो रिपु मोरा।। ....
11. छुअत टूट रघुपतिहु न दोसू। मनि बिनु काज करिअ कत रोसू।। ....
12. बोले चितै परसु की ओरा। रे सठ सुनेहि सुभाउ न मोरा।। ....
13. बालक बोलि बधौं नहि तोही। केवल मुनि जड़ जानहि मोही।। ....
14. पुनि-पुनि मोहि देखाव कुठारू। ....
15. कोटि कुलिस सम बचनु तुम्हारा। व्यर्थ धरहुँ धनु बान कुठारा।। ....
16. सूर समर करनी करहिं कहिन जनावहिं आपु। विद्यमान रन पाइ रिपु कायर कथहिं प्रतापु।। ....
17. तुम्ह तौ कालु हाँक जनु लावा। बार-बार मोहि लागि बोलावा। ....
18. लखन उतर आहुति सरिस भृगुबर कोपु कृसान। बढत देखि जल सम वचन बोले रघुकुल भानु।। ....
19. कटि किंकिनि कै धुनि की मधुराई। ....
20. जै जग-सुंदर-दीपक मंदिर। ....

रचनात्मक मूल्यांकन

क्रियाकलाप 1. अलंकार संबंधी प्रपत्र भरना।

समय– 20 मिनट

उद्देश्य–
- अलंकारों की पहचान कराना।
- भाषा-सौंदर्य वृद्धि की कला का ज्ञान कराना।

प्रक्रिया–
- अध्यापक छात्रों में निम्न प्रपत्र वितरित करेंगे, जिसके खाली गोले में छात्र संबंधित अलंकार का नाम लिखेंगे और क्रमानुसार उनका एक-एक उदाहरण भी लिखेंगे–

प्रपत्र–

(*i*) बेजान पर चेतना का आरोप किया जाता है।

(*ii*) व्यंजन वर्णों की आवृत्ति।

(*iii*) शब्द जितनी बार आए उतने ही अर्थ निकलते हैं।

(*iv*) शब्द एक ही बार आता है पर अर्थ अनेक निकलते हैं।

(*v*) उपमेय में उपमान का अभेद आरोपित किया जाता है।

(*vi*) बात को बढ़ा-चढ़ाकर कहा जाता है।

(*vii*) किसी प्रसिद्ध वस्तु से समानता दर्शाना।

(*viii*) उपमेय में उपमान की संभावना व्यक्त करना।

उदाहरण–

(*i*) ....

(*ii*) ....

(*iii*) ....

(*iv*) ....

(*v*) ....

(*vi*) ....

(*vii*) ....

(*viii*) ....

मूल्यांकन के आधार बिंदू–प्रत्येक सही उत्तर एवं उदाहरण के लिए–1 अंक × 8 = 8 अंक

भाषिक शुद्धता	1 अंक
समयबद्धता	1 अंक
	कुल–10 अंक

क्रियाकलाप 2. दिए गए वाक्यों में अलंकार के सही विकल्प पर सही (✓) का निशान लगाना।

उद्देश्य–
- अलंकारों की पहचान कराना।
- अलंकारों के प्रयोग में दक्षता लाना।

प्रक्रिया–
- अध्यापक दस उदाहरण विकल्प सहित लिखेंगे और उनकी छायाप्रति (Photostat) छात्रों में वितरित करेंगे।
- इन काव्य पंक्तियों में निहित अलंकारों के लिए तीन विकल्प दिए गए हैं। अपने उत्तर के लिए सही विकल्प पर निशान लगाएँ।

1. हाय! फूल-सी कोमल बच्ची हुई राख का ढेरी।

   अनुप्रास ☐ उपमा ☐ मानवीकरण ☐

2. नभ में चमचम चपला चमकी।

उत्प्रेक्षा ☐ यमक ☐ अनुप्रास ☐

3. प्रेम-सलिल से द्वेष का मैल सारा धुल गया।

रूपक ☐ यमक ☐ उत्प्रेक्षा ☐

4. मानो तरु भी झूम रहे हैं मंद पवन के झोंकों से।

अनुप्रास ☐ उत्प्रेक्षा ☐ श्लेष ☐

5. अंबर पनघट में डुबो रही ताराघट उषा नागरी।

मानवीकरण ☐ उपमा ☐ यमक ☐

6. कहे कबि बेनी बेनी ब्याल की चुराई लीन्हीं।

उत्प्रेक्षा ☐ रूपक ☐ यमक ☐

7. तरनि तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाए।

मानवीकरण ☐ अनुप्रास ☐ रूपक ☐

8. पानी गए न ऊबरे मोती, मानुष, चून।

उपमा ☐ श्लेष ☐ उत्प्रेक्षा ☐

9. मनहुँ रंक निधि लूटन लागी।

उत्प्रेक्षा ☐ उपमा ☐ मानवीकरण ☐

10. हैं कई पत्थर किनारे, पी रहे चुपचाप पानी।

अनुप्रास ☐ श्लेष ☐ मानवीकरण ☐

मूल्यांकन के आधार बिंदु–

9–10 सही उत्तर	– 5 अंक
7–8 सही उत्तर	– 4 अंक
5–6 सही उत्तर	– 3 अंक
3–4 सही उत्तर	– 2 अंक
1–2 सही उत्तर	– 1 अंक

❑❑❑